Volume I, Issue XXI
January to March 2018
U.G.C. Journal No. 64728

RNI No. – MPHIN/2013/60638
ISSN 2320-8767, E-ISSN 2394-3793
Impact Factor - 5.110 (2017)

Naveen Shodh Sansar

(An International Multidisciplinary Refereed Journal)
(U.G.C. Approved Journal)

नवीन शोध संसार

Editor - Ashish Narayan Sharma

Office Add. "Shree Shyam Bhawan", 795, Vikas Nagar Extension 14/2, **NEEMUCH** (M.P.) 458441, (INDIA)
Mob. 09617239102, **Email** : nssresearchjournal@gmail.com, **Website** www.nssresearchjournal.com

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal) (U.G.C. Jr. No. 64728)
ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Impact Factor - 5.110 (2017) January To March 2018, Vol. I

डॉ. रामनारायण शर्मा - खड़ी बोली और बुन्देली के सशक्त कवि

लोकेश कुमार *

प्रस्तावना - साहित्य सृजन व्यक्ति के परिवेश प्रकृति एवं परिस्थिति से घटित घटनाओं से उद्भूत भावनाओं संवेदनाओं के प्रकटीकरण से होता हैं। जैसे आदि कवि के मुख से निस्सृत शब्द क्रौन्च-वध से उपजी पीड़ा के कारण मर्मान्तिक छंद बने। किन्तु व्यक्ति के कार्य-कलापों के समय उत्पन्न आनंद अवसाद, करूणा क्षोभ, शौर्य, प्रणय उसके अपने गीत बन जाते है, डॉ. शर्मा एक उच्चधिकारी के पद से सेवा निवृत्ति होते हुए, भी एक संवेदनशील व्यक्ति हैं, जिससे उनका अधिकांश साहित्य उनकी उदारता और संवेदनशीलता का सुपरिणाम हैं।

डॉ. शर्मा ने प्रारम्भिक साहित्य को अपनी एक डायरी 'साहित्य साधना' में एक संग्रह कर सुरक्षित किया था। सेवानिवृत्ति के बाद वे संग्रहित साहित्य को सजाकर प्रकाशन की ओर ध्यान देने लगे थे। डॉ. शर्मा का साहित्य विविध विधाओं में प्राप्त होता हैं। सेवानिवृत्त के पश्चात् उनके कार्य-कलाप में भारी परिवर्तन हुआ। वे अपने चिकित्सकीय कार्य को छोड़कर साहित्य साधना में लीन हो गए। उनका सारा परिवार साहित्यिक एवं काव्यमय रहा हैं।

काव्य प्रतिभा शर्मा जी में जन्म-जात थी। आप छात्र जीवन में काव्य पंक्तियॉ जोड़ने लगे थे, उनकी टूटी-फूटी काव्य पंक्तियों को उनके ज्येष्ठ भ्राता पं. कन्हैयालाल जी संशोधित करके उन्हें प्रोत्साहित करते रहते थे। वे सन् 1949-50 में जब कक्षा सात में पढ़ रहे थे उस समय उन्होंने गांधी जंयती के अवसर पर गांधी जी पर एक कविता बनाकर स्कूल में सुनाई थी और संस्था की ओर से उन्हें प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ था। उनका उत्साह बढ़ता ही गया और वे एक नवोदित बाल कवि के रूप में चर्चित हो गए। उनकी कविता में निखार आता गया। अध्ययन करने के बाद वे एक शासकीय चिकित्सालय में चिकित्सक के पद पर नियुक्त हो गए। उस समय भी उनकी लेखनी संचालित रही। शर्मा जी की परिपक्व बुद्धि से प्रथम कविता वह बनी जिसे उन्होंने सन् 1972 में जिला चिकित्सालय झांसी के ड्यूटी रूम में बैठकर लिखी थी। रात्रि में आपात वार्ड में भर्ती बेहोश महिला को जब होश आया तो डॉ.शर्मा को वार्ड से बुलाया गया। वहॉ डॉ.शर्मा ने उसके अनजान-अनबोले भाव उसके ऑसुओं में पढ़े। उसके देहावासन पर उनकी लेखनी से यह काव्य पंक्तियॉ निकल पड़ी-

'सुनो नर्स,
आपत्ति न हो तो
खिड़की के पर्दे समेट दो,
उषा की लाली के रंग में,
मेरा पीला रंग मिलने दो,
फिर जाने कब सुबह मिलेगी,
आत्म निवेदन कर लेने दो।'[1]

इनके बाद नववर्ष, होली, बंसत, प्रणय, गीत आदि काव्य रचनाऍ विभिन्न अवसरो पर लिखी गई और पढ़ी गई। कुष्ट दिवस पर सन् 1987 में रची कविता के भावों में वेदना की अभिव्यक्ति दृष्टव्य है-

'आज उनको फिर नमन हैं,
जिन्दगी जिनकी हवन हैं।
काल के कर पात्र में कवि,
बन सुलभ जीवन रहा हैं।
अग्नि के नव कुण्ड में अर्पित,
हुआ तन-मन विकल हैं
वेद-मंत्रों की ऋचाऍ,
मूक भाषा बन गई है।
अश्रु की जल धार ही,
इनके लिए सब आचमन हैं।
जिंदगी जिनकी हवन हैं।'[2]

नव-वर्ष के हर्षित वातावरण में मन कुछ गुनगुनाते लगता हैं इस आनंदपूर्ण आयोजन के अवसर पर डॉ. शर्मा के मनोरम भाव देखने योग्य है-

'जीवन के शाश्वत रंग,
बिखर रहे धरती पर।
मानव मन मुखरित हो,
गुन-गुन-गुन गा रहा।
प्राकृत के शूल सभी,
फूल बने आगत के।
स्वागत समीर शांत,
शांति गीत गा रहा।'

डॉ. शर्मा का हिन्दी और बुदेली पर पूर्ण अधिकार है। वे गद्य और पद्य लेखन में पूर्ण दक्ष हैं। उन्होंने बुदेली में कवि गोष्ठी कविता आल्हा शैली में लिखी है-

'पाती पौची गढ़ झॉसी से, भइया सुनो हमारी बात,
सात सिम्बर रविवार खो कवियन की फिर जुरै जमात।
औसर है जो महाघड़ी को आवत मास एक ही बार,
इतनी सुनकै कवियन के मन, गूँजी कविता की हुँकार।
छदं-बंद गढ़-गये, हो गये जाने को तैयार,
छिड़ियन-छिडियन चले कवि जन पौचे मध्य बड़े बाजार।
हुलक-हुलक कै चढ़ै अटारी जितै परें कविता की मार।
बड़े - बड़े तो हौंदा पा गये, छुटकन बैठे पाव पसार।।[3]

* 273/1, शशांक नगर, बडोरा जिला, बैतूल (म.प्र.) भारत

कविवर रामचरण हरायण यमित्र' जी की संस्मृति सभा के अवसर पर डॉ. शर्मा ने भाव-प्रसून कितने सुवासित हैं इन पांक्तियों में उनकी एक झलक देखिए-

'भये ते ऐसे मित्र हमारे, बुंदेली के प्यारे।
कद काठी रंग रूप सबई से, बुंदेली से सोहे।
सेत बसन धोती कुरता में, सबके मन को मोहे।
हरॉ हरॉ डग भरत चलत ज्यों, रचे कद कविता के।'[4]

पिछले कुछ वर्षो में सुनामी की विनाश लीला से सारा देश ग्रस्त हो गया था। इसी त्रासदी पर डॉ. शर्मा ने एक कवि गोष्ठी का आयोजन किया। इस अवसर पर नगर के कवियों ने क्षोभ व्यक्त करते हुए अपनी-अपनी रचनाएँ व्यक्त की। इस अवसर पर व्यक्त की गई डॉ.शर्मा की काव्य पांक्तियॉ देखने योग्य हैं-

'सागर ही लॉघ जाये, सीमा तट बँधों की।
लहरें जब कारण बने, मनुज के विकास की।
कौन कहे सागर सग, धीर और गम्भीर की।
लहर बने जीवन के, क्रूर-कराल काल की।'[5]

डॉ.शर्मा ने अभिनव ईसुरी की उपाधि से विभूषित चौकड़िया फाग सम्राट कविवर ओमप्रकाश सक्सेना 'प्रकाश' के देहावसान के अवसर पर श्रृध्दांजली समारोह में बुंदेली की कुछ पंक्तियॉ पढ़ी थीं, उनका एक अंश यहा प्रस्तुत है-

'ओम-ओम से उपजे आखर, कविता के सब छंद बनें ते।
बुंदेली बगिया के तुमने, सुरभित-सौरभ गान रचेते।
ईसुर की बगिया के साचऊ, तोरन बंदन वार हते तुम।
बुंदेली बानी के सच्चे, असली पहरेदार हते तुम।'

इनके अतिरिक्त अनेक स्फुट रचनाएँ डॉ.शर्मा लगातार लिखते रहे और आज भी लिख रहे हैं। जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं, और आकाशवाणी केन्द्र से प्रसारित होती रही हैं। उन्होंने बुंदेली भाषा में 'महाकवि ईसुरी' महाकाव्य की रचना की जो बुंदेली साहित्य का अनुपम उपहार हैं। यह ग्रंथ सन् 2005 में प्रकाशित हुआ। महाकाव्य का यह छंद देखने योग्य है, जिनमें कवि की काव्य कला दिखाई दे रही हैं-

'फागन-फागन ग्यान बता गये, फड़ के रंग रूप दिखला गये,
सिंगार रूप लावनियॉ गा गये, गैलारे खौ गैल बता गये।
ईसुर उपजै जी माटी से, माटी कौ जस कर गये,
फागुन की फुन-गुनियॅन भीतर, फागन-फागन भर गये।।'

इस महाकाव्य पर अनेक विद्वान डॉ.गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैयॉ', डॉ.परशुराम शुक्ल 'विरही', डॉ.रमेशचंद्र खरे आदि मनीषियों ने समीक्षाएँ लिखी हैं। स्व.डॉ. बलभद्र तिवारी हिन्दी विभागाध्यक्ष सागर विश्वविद्यालय ने इसे एक महाकाव्य मानकर लिखा हैं - 'ईसुरी के जीवन पर बहुत लिखा गया हैं, किन्तु उन्हें चरित नायक बनाकर समस्त जीवन का सांस्कृतिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक चिन्तन डॉ. रामनारायण शर्मा ने ही किया हैं।' बुंदेली का वैभव और कवि चरित नायक संबंधी धारणाएँ अत्यंत ही मौलिक हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. अन्तर्ध्वनि - डॉ.रामनारायण शर्मा पृष्ठ - 16
2. अन्तर्ध्वनि- डॉ.रामनारायण शर्मा पृष्ठ - 20
3. अक्षत चंदन(अभिनंदन ग्रंथ) - डॉ.रामनारायण शर्मा पृष्ठ - 146
4. अक्षत चंदन(अभिनंदन ग्रंथ) - डॉ.रामनारायण शर्मा पृष्ठ - 150
5. अक्षत चंदन(अभिनंदन ग्रंथ) - डॉ.रामनारायण शर्मा पृष्ठ - 152

****